19 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

आत्म ज्ञान और परमात्म ज्ञान में अन्तर समझना

➢➢ परमात्म ज्ञान के हर बात का अनुभवीमूर्त बनना...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अतंर्मुखी होकर स्वयं को देख रही हूँ...

→ मस्तक पर देदीप्यमान एक मणि हूँ...

→ परमपिता परमात्मा की संतान हूँ...

→ जो परमधाम से आयें हैं-

- मुझे राजयोग सिखाने..
- अपना सारा ज्ञान, सारे खजाने मुझ पर लुटाने..
- मुझे पावन बनाकर वापस घर ले जाने..
- फिर से स्वर्णिम दुनिया की स्थापना करने..

→ ऐसे पिता की संतान हूँ जो सागर है...

→ सर्व शक्तिवान है...

→ जिससे मुझे अनगिनत प्राप्तियां मिली हैं...

→ जिसने मुझे आदि, मध्य, अंत का ज्ञान देकर त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री बना दिया..

➳ _ ➳ मैं आत्मा एकांत में बैठ एक के अंत में खो जाती हूँ...

→ परमात्मा अपनी ज्ञान की किरणों से मुझे सराबोर कर रहे हैं...

→ बाबा अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख वरदान मुझ पर बरसा रहे हैं...

- 'मास्टर सर्वशक्तिवान भव'
- 'विजयी रत्न भव'
- 'स्वदर्शन चक्रधारी भव'
- 'सहज राजयोगी भव'
- 'महादानी वरदानी भव'
- 'विश्व कल्याणकारी भव'
- 'मायाजीत भव'

➳ _ ➳ मैं आत्मा ज्ञान की हर प्वाइंट का अनुभव कर चढ़ती कला की ओर जा रही हूँ...

→ मैं आत्मा इस श्रेष्ठ जीवन की श्रेष्ठ नालेज को स्वयं में धारण कर अनुभवीमूर्त बन रही हूँ...

- स्वयं परमात्मा द्वारा परमात्म ज्ञान कल्प में एक बार ही मिलता है...

■ आत्माएं हैं, आत्म ज्ञान सुनाने और समझाने वाली न कि अनुभव कराने वाली

→ मैं सिर्फ ज्ञान को सुनने, समझने और वर्णन करने वाली नहीं बल्कि हर प्वाइंट को अनुभव में ला रही हूँ...

→ मैं आत्मा शब्दों को अपना आधार नहीं बनाती हूँ...

→ बाप के भाव को समझ अनुभव को अपना आधार बना रही हूँ...

→ मैं आत्मा स्वयं की चेकिंग कर हर प्वाइंट की अनुभवी मूर्त बन रही हूँ...

→ अनुभवी मूर्त बन सर्व प्राप्ति स्वरूप बन रही हूँ...

→ हर बात के अनुभव में स्वयं को सम्पन्न बना रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा अनुभव रूपी फाउंडेशन को मजबूत कर नालेजफुल और पावरफुल बन रही हूँ...

→ मेरे स्वयं के संस्कार या अन्य के संस्कारों से मजबूर नहीं होती हूँ...

→ माया के छोटे-बड़े विघ्नों से घबराती नहीं हूँ...

→ कभी भी दुःख की लहरों में नहीं आती हूँ, ना धोखा खाती हूँ...

■ मैं आत्मा अनुभवी मूर्त, बुजुर्ग बन माया को बेसमझ बच्चे की तरह समझती हूँ...

■ माया के अनेक प्रकार की लीला को छोटे बच्चे का खेल अनुभव करती हूँ...

■ मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज पर स्थित होकर माया पर जीत पा रही हूँ...

■ सदा बाबा के साथ का अनुभव कर मायाजीत बन रही हूँ...

■ महावीर बन माया के भिन्न-भिन्न स्वरूपों को भस्मी भूत कर रही हूँ...

■ बाप समान बन माया का सामना कर रही हूँ...

■ माया के हर वार को सहज ही पार कर रही हूँ...